पश्चिम बंगाल माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (WBBSE)

कक्षा 7 हिंदी

अध्याय 6

वरदान माँगूँगा नहीं

प्रश्न बैंक

birlaeducation.org

कक्षा 7 की कोई बोर्ड परीक्षा नहीं होती; यह प्रश्न बैंक पाठ्यपुस्तक और अध्याय के विषयों पर आधारित है

बिरला एजुकेशन

अध्याय 6: वरदान माँगूँगा नहीं

रचयिता: शिवमंगल सिंह 'सुमन'

अध्याय का सार

कवि जीवन को महासंग्राम मानता है और हार को केवल एक विराम। वह तिल तिल मिट जाएगा पर दया की भीख नहीं लेगा, सुखद स्मृतियों या अपने खंडहरों के लिए विश्व की संपत्ति नहीं चाहेगा, हार जीत दोनों को समान भाव से स्वीकार करेगा, अपनी लघुता और हृदय की वेदना को त्यागेगा नहीं, और चाहे ताप मिले या अभिशाप, कर्त्तव्य पथ से कभी नहीं भागेगा।

भावार्थ

संघर्ष पथ पर जो मिले, यह भी सही वह भी सही, वरदान माँगूँगा नहीं।

कुछ भी करो कर्त्तव्य पथ से किन्तु भागूँगा नहीं।

कवि जीवन को महासंग्राम बतलाता है। वह जीवन यात्रा में आने वाली भयंकर स्थितियों से संघर्ष करना चाहता है। इस संघर्ष में हार या जीत होती है और पराजय एक पड़ाव के समान है। इस जीवन युद्ध में कवि तिल तिल कर मिट जाने के बावजूद किसी से दया की भिक्षा स्वीकार नहीं कर सकता। अपने स्वाभिमान की रक्षा करते हुए वह किसी की अनुकंपा नहीं चाहता और किसी से वरदान नहीं माँग सकता।

कवि किसी भी महान व्यक्ति से, देवता से अथवा धन कुबेर या राजनेता से किसी भी प्रकार की इष्ट वस्तु नहीं चाहता। चाहे उसके हृदय को पीड़ा मिले, चाहे श्राप मिले या उस पर मिथ्यावाद लगे, उससे चाहे जैसा भी व्यवहार हो, पर वह किसी भी परिस्थिति में कर्त्तव्य मार्ग से दूर नहीं हटेगा। कवि अपने जीवन को संघर्ष से ही सफल बनाना चाहता है।

लेखक/कवि परिचय

शिवमंगल सिंह 'सुमन' का जन्म सन् 1915 में उन्नाव में हुआ था। वे हिंदी के प्रसिद्ध कवि हैं और उनकी कविताओं में संघर्ष, स्वाभिमान और कर्त्तव्य परायणता की भावना मिलती है। इस कविता में उन्होंने जीवन को महासंग्राम मानकर हार जीत को समान भाव से स्वीकार करने और कभी वरदान न माँगने की प्रेरणा दी है। नोट: कवि के जन्म वर्ष के बारे में स्रोतों में अंतर है, पाठ्यपुस्तक अभ्यास के बहुविकल्पीय प्रश्न का उत्तर 1915 देता है, जबकि सारांश खंड में 1916 लिखा है। यहाँ उत्तर के अनुसार 1915 रखा गया है, अंतिम सत्यापन भौतिक पुस्तक से लंबित है। कवि का यह परिचय समाधान साइट पर छपे पाठ्यपुस्तक अभ्यास पर आधारित है, भौतिक पुस्तक से सत्यापित नहीं हुआ है।

bidaeducation.org

कठिन शब्द

शब्द	अर्थ
हार	पराजय, असफलता
विराम	पड़ाव, ठहराव, विश्राम
महासंग्राम	जीवन यात्रा में आने वाली कठिनाइयों से लड़ना
तिल-तिल मिटना	कण कण खत्म हो जाना
वरदान	देवता अथवा गुरुजन की प्रसन्नता के फलस्वरूप प्राप्त फल
स्मृति	याद
खंडहर	भग्नावशेष, टूटा फूटा घर
लघुता	तुच्छता, छोटापन, हल्कापन
वेदना	पीड़ा
ताप	कष्ट, पीड़ा
अभिशाप	श्राप, झूठा दोष
कर्त्तव्य पथ	करने योग्य मार्ग

birlaeducation.org

समूह A: बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQ), 12 प्रश्न

सही विकल्प को गहरे (बोल्ड) अक्षरों में दिखाया गया है।

1. इस कविता में कवि ने जीवन को क्या कहा है? पाठ्यपुस्तक

(क) खण्डहर

(ख) महासंग्राम

(ग) वरदान

(घ) नदी

उत्तर: (ख) महासंग्राम।

---

2. कवि इस कविता में किसकी प्रेरणा देता है? पाठ्यपुस्तक

(क) संघर्ष एवं कर्त्तव्य परायणता

(ख) स्मृति की

(ग) संपत्ति प्राप्ति की

(घ) भीख माँगने की

उत्तर: (क) संघर्ष एवं कर्त्तव्य परायणता।

---

3. 'सुमन' किसका उपनाम है? पाठ्यपुस्तक

(क) शिवमंगल सिंह

(ख) सूर्यकांत त्रिपाठी

(ग) सुमित्रानंदन पंत

(घ) शमशेर बहादुर सिंह

उत्तर: (क) शिवमंगल सिंह।

---

4. 'वरदान माँगूँगा नहीं' किसकी रचना है? पाठ्यपुस्तक

(क) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

(ख) गजानन माधव 'मुक्तिबोध'

(ग) शिवमंगल सिंह 'सुमन'

(घ) श्रीधर पाठक

उत्तर: (ग) शिवमंगल सिंह 'सुमन'।

birlaeducation.org

---

5. शिवमंगल सिंह 'सुमन' का जन्म कब हुआ? पाठ्यपुस्तक

(क) सन् 1905

(ख) सन् 1910

(ग) सन् 1915

(घ) सन् 1920

उत्तर: (ग) सन् 1915।

---

6. शिवमंगल सिंह 'सुमन' का जन्म कहाँ हुआ था? पाठ्यपुस्तक

(क) गढ़कोला

(ख) उन्नाव

(ग) ग्वालियर

(घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर: (ख) उन्नाव।

---

7. कवि कैसी भीख नहीं चाहता? पाठ्यपुस्तक

(क) प्रेम

(ख) दया

(ग) धन

(घ) बल

उत्तर: (ख) दया।

---

8. कवि ने क्या माँगूँगा नहीं कहा है? पाठ्यपुस्तक

(क) भीख

(ख) वरदान

(ग) भोजन

(घ) सुख

उत्तर: (ख) वरदान।

---

9. कविता में ताप का अर्थ क्या है? पाठ्यपुस्तक

(क) झूठा

(ख) श्राप

(ग) कष्ट

(घ) गर्मी

उत्तर: (ग) कष्ट।

birlaeducation.org

---

10. कवि ने हार को क्या माना है? पाठ्यपुस्तक

(क) विराम

(ख) अंत

(ग) हार

(घ) जीत

उत्तर: (क) विराम।

---

11. कवि किससे भागना नहीं चाहता है? पाठ्यपुस्तक

(क) कर्त्तव्य पथ से

(ख) संघर्ष से

(ग) जीवन से

(घ) दुःख से

उत्तर: (क) कर्त्तव्य पथ से।

---

12. कवि अपनी लघुता को किससे तुलना में देखता है? अतिरिक्त

(क) बड़े लोगों से

(ख) छोटे लोगों से

(ग) देवताओं से

(घ) राजाओं से

उत्तर: (क) बड़े लोगों से।

समूह B: रिक्त स्थान भरिए, 10 प्रश्न

1. 'हार' का विलोम _____ है। पाठ्यपुस्तक

उत्तर: जीत

---

2. 'जीवन' का विलोम _____ है। पाठ्यपुस्तक

उत्तर: मृत्यु

---

3. 'स्मृति' का विलोम _____ है। पाठ्यपुस्तक

उत्तर: विस्मृति

---

4. 'लघुता' का विलोम _____ है। पाठ्यपुस्तक

उत्तर: गुरुता

birlaeducation.org

---

5. 'वरदान' का विलोम _____ है। पाठ्यपुस्तक

उत्तर: अभिशाप

---

6. 'अभिशाप' शब्द में _____ उपसर्ग है। पाठ्यपुस्तक

उत्तर: अभि

---

7. 'विराम' शब्द में _____ उपसर्ग है। पाठ्यपुस्तक

उत्तर: वि

---

8. 'ता' प्रत्यय से बना शब्द _____ है। पाठ्यपुस्तक

उत्तर: लघुता

---

9. कवि ने हार को _____ माना है। पाठ्यपुस्तक

उत्तर: विराम

---

10. कवि जीवन को _____ मानता है। पाठ्यपुस्तक

उत्तर: महासंग्राम

समूह C: सत्य / असत्य, 10 प्रश्न

1. कवि जीवन को महासंग्राम मानता है। पाठ्यपुस्तक

उत्तर: सत्य

2. कवि दया की भीख चाहता है। पाठ्यपुस्तक

उत्तर: असत्य

3. कवि वरदान माँगना चाहता है। पाठ्यपुस्तक

उत्तर: असत्य

4. हार को कवि ने विराम माना है। पाठ्यपुस्तक

उत्तर: सत्य

5. संघर्ष पथ पर कवि को हार जीत दोनों स्वीकार हैं। पाठ्यपुस्तक

उत्तर: सत्य

birlaeducation.org

6. कवि कर्त्तव्य पथ से भागना चाहता है। पाठ्यपुस्तक

उत्तर: असत्य

7. 'सुमन' शिवमंगल सिंह का उपनाम है। पाठ्यपुस्तक

उत्तर: सत्य

8. कवि विश्व की संपत्ति चाहता है। पाठ्यपुस्तक

उत्तर: असत्य

9. 'ताप' का अर्थ कष्ट है। पाठ्यपुस्तक

उत्तर: सत्य

10. कवि अपनी वेदना को त्याग देना चाहता है। पाठ्यपुस्तक

उत्तर: असत्य

समूह D: लघु उत्तरीय प्रश्न (SAQ), 20 प्रश्न

उत्तर 3 से 5 पंक्तियों में लिखिए।

1. किसके लिए कवि विश्व की संपत्ति नहीं चाहता? पाठ्यपुस्तक

उत्तर: कवि अपने सुखद क्षणों को यादगार बनाने के लिए, अपने अभावों की पूर्णता के लिए और भग्न अवशेषों के निर्माण के लिए विश्व की संपत्ति नहीं चाहता है।

---

2. 'लघुता' शब्द से आप क्या समझते हैं? पाठ्यपुस्तक

उत्तर: लघुता का अर्थ है तुच्छता या हल्कापन। यहाँ कवि ने बड़े लोगों से तुलना करते हुए अपने को उनके दृष्टिकोण से छोटा या अल्प शक्ति और सामर्थ्य वाला कहा है।

---

3. कवि किससे वरदान की कामना नहीं कर रहा है? पाठ्यपुस्तक

उत्तर: कवि अपने को सामान्य वर्ग का व्यक्ति मानता है। वह अपने आपको महान, श्रेष्ठ और सर्वसाधन संपन्न समझने वाले लोगों से दूर ही रखना चाहता है। वे महान बने रहें। कवि ऐसे लोगों से वरदान की कामना नहीं कर रहा है।

---

4. कवि ने हार को क्या माना है? पाठ्यपुस्तक

उत्तर: कवि ने हार को विराम माना है।

birlaeducation.org

---

5. संघर्ष पथ पर कवि को क्या क्या स्वीकार है? पाठ्यपुस्तक

उत्तर: संघर्ष पथ पर कवि को हार जीत सब स्वीकार है।

---

6. कवि कहाँ से भागना नहीं चाहता है? पाठ्यपुस्तक

उत्तर: कवि कर्त्तव्य पथ से भागना नहीं चाहता है।

---

7. कविता के शीर्षक का क्या अर्थ है? अतिरिक्त

उत्तर: कविता के शीर्षक 'वरदान माँगूँगा नहीं' का अर्थ है कि कवि किसी से भी वरदान नहीं माँगेगा, चाहे कैसी भी परिस्थिति हो। वह अपने स्वाभिमान की रक्षा करते हुए संघर्ष से ही जीवन सफल बनाना चाहता है।

---

8. कवि तिल तिल मिटने को क्यों तैयार है? अतिरिक्त

उत्तर: कवि तिल तिल मिटने को इसलिए तैयार है क्योंकि वह किसी से दया की भीख नहीं लेना चाहता। वह अपने स्वाभिमान की रक्षा करते हुए संघर्ष के पथ पर चलना चाहता है।

---

9. 'महासंग्राम' से कवि का क्या तात्पर्य है? अतिरिक्त

उत्तर: महासंग्राम से कवि का तात्पर्य है कि जीवन एक बड़ा युद्ध है, जिसमें मनुष्य को कठिनाइयों और विपत्तियों से लगातार संघर्ष करना पड़ता है।

---

10. कवि किन लोगों से दूर रहना चाहता है? अतिरिक्त

उत्तर: कवि उन लोगों से दूर रहना चाहता है जो अपने को महान, श्रेष्ठ और सर्वसाधन संपन्न समझते हैं। वह अपने को सामान्य वर्ग का व्यक्ति मानता है और उनसे वरदान की कामना नहीं करता।

---

11. कवि अपनी वेदना क्यों नहीं त्यागना चाहता? अतिरिक्त

उत्तर: कवि अपने हृदय की वेदना को त्यागना नहीं चाहता, क्योंकि वह अपनी पीड़ा को अपने मन में ही रखना चाहता है। वेदना को दूर करने के लिए किसी से वरदान माँगना उसे उचित नहीं लगता।

---

12. 'ताप' और 'अभिशाप' का क्या अर्थ है? अतिरिक्त

उत्तर: ताप का अर्थ है कष्ट और पीड़ा, और अभिशाप का अर्थ है श्राप या झूठा दोष। कवि कहता है कि चाहे उसे ताप मिले या अभिशाप, वह कर्त्तव्य पथ से कभी नहीं भागेगा।

---

13. कवि को संघर्ष पथ पर क्या क्या स्वीकार है? अतिरिक्त

उत्तर: संघर्ष पथ पर कवि को हार और जीत दोनों स्वीकार हैं। वह कहता है कि संघर्ष पथ पर जो मिले, यह भी सही और वह भी सही, पर वह वरदान नहीं माँगेगा।

---

14. कर्त्तव्य पथ से भागने से क्या तात्पर्य है? अतिरिक्त

उत्तर: कर्त्तव्य पथ से भागने से तात्पर्य है, अपने कर्त्तव्य और उत्तरदायित्व से मुँह मोड़ लेना। कवि कहता है कि चाहे कुछ भी हो, वह अपने कर्त्तव्य पथ से कभी नहीं भागेगा।

bhiaeducation.org

---

15. कवि की स्वाभिमान भावना कैसे व्यक्त हुई है? अतिरिक्त

उत्तर: कवि की स्वाभिमान भावना इस बात से व्यक्त हुई है कि वह तिल तिल मिट जाएगा, पर दया की भीख नहीं लेगा, किसी से वरदान नहीं माँगेगा और विश्व की संपत्ति भी नहीं चाहेगा।

---

16. 'खंडहर' किसका प्रतीक है? अतिरिक्त

उत्तर: खंडहर भग्नावशेष का प्रतीक है, अर्थात् जीवन के टूटे फूटे अवशेष और अतीत के बिखरे हुए सपने। कवि अपने खंडहरों के निर्माण के लिए भी विश्व की संपत्ति नहीं चाहता।

---

17. सुखद स्मृतियों के लिए कवि क्या नहीं चाहता? अतिरिक्त

उत्तर: सुखद स्मृतियों को यादगार बनाने के लिए भी कवि विश्व की संपत्ति नहीं चाहता। वह अपने अतीत की सुखद यादों के लिए किसी से वरदान नहीं माँगना चाहता।

---

18. कवि का जीवन दृष्टिकोण क्या है? अतिरिक्त

उत्तर: कवि का जीवन दृष्टिकोण है कि जीवन एक महासंग्राम है, हार केवल एक विराम है, संघर्ष पथ पर हार जीत दोनों स्वीकार करनी चाहिए और किसी से वरदान माँगे बिना कर्त्तव्य पथ पर दृढ़ रहना चाहिए।

---

19. कविता की प्रेरणा एक पंक्ति में लिखिए। अतिरिक्त

उत्तर: कविता की प्रेरणा है कि मनुष्य स्वाभिमान के साथ संघर्ष करे, हार जीत को समान भाव से स्वीकार करे और कर्त्तव्य पथ से कभी न भागे।

---

20. कवि बड़े लोगों को क्या संदेश देता है? अतिरिक्त

उत्तर: कवि बड़े लोगों को संदेश देता है कि वे महान बने रहें, उसे उनसे कुछ नहीं चाहिए। वह अपने को सामान्य वर्ग का व्यक्ति मानता है और उनसे वरदान की कामना नहीं करता।

समूह E: दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (LAQ), 20 प्रश्न

उत्तर विस्तार से लिखिए।

1. 'वरदान माँगूँगा नहीं' कविता का संक्षिप्त सार लिखिए। पाठ्यपुस्तक

उत्तर: इस कविता में कवि जीवन को एक महासंग्राम तथा जीवन में पराजय को एक पड़ाव मानता है। वह किसी भी परिस्थिति में दया की भिक्षा नहीं माँग सकता। अपने सुखद यादों के लिए या अपने अभाव को पूरा करने के लिए भी वह विश्व का वैभव नहीं चाहता। महान बने लोगों से दूर रहकर वह अपने दिल के दर्द को नहीं छोड़ेगा। उसे कष्ट मिले या श्राप, किन्तु वह कर्त्तव्य मार्ग पर अडिग बना रहेगा। वह कभी भी किसी से वरदान की याचना नहीं करेगा।

birlaeducation.org

---

2. कवि किन किन परिस्थितियों में वरदान नहीं माँगने की बात करता है? पाठ्यपुस्तक

उत्तर: कवि अपने जीवन में चाहे तिल तिल कर मिट जाए, पर वह वरदान नहीं माँग सकता। अपनी सुखद यादों के लिए, अपनी कमी को पूर्ण करने के लिए, अपने हृदय की पीड़ा को दूर करने के लिए तथा संताप या अभिशाप की स्थिति में भी कवि वरदान नहीं माँगना चाहता।

---

3. 'संघर्ष पथ पर जो मिले, यह भी सही वह भी सही, वरदान माँगूँगा नहीं।' सप्रसंग व्याख्या कीजिए। पाठ्यपुस्तक

उत्तर: कवि जीवन को महासंग्राम बतलाता है। वह जीवन यात्रा में आने वाली भयंकर स्थितियों से संघर्ष करना चाहता है। इस संघर्ष में हार या जीत होती है और पराजय एक पड़ाव के समान है। इस जीवन युद्ध में कवि तिल तिल कर मिट जाने के बावजूद किसी से दया की भिक्षा स्वीकार नहीं कर सकता। अपने स्वाभिमान की रक्षा करते हुए वह किसी की अनुकंपा नहीं चाहता और किसी से वरदान नहीं माँग सकता।

---

4. 'कुछ भी करो कर्त्तव्य पथ से किन्तु भागूँगा नहीं।' सप्रसंग व्याख्या कीजिए। पाठ्यपुस्तक

उत्तर: कवि किसी भी महान व्यक्ति से, देवता से अथवा धन कुबेर या राजनेता से किसी भी प्रकार की इष्ट वस्तु नहीं चाहता। चाहे उसके हृदय को पीड़ा मिले, चाहे श्राप मिले या उस पर मिथ्यावाद लगे, उससे चाहे जैसा भी व्यवहार हो, पर वह किसी भी परिस्थिति में कर्त्तव्य मार्ग से दूर नहीं हटेगा। कवि अपने जीवन को संघर्ष से ही सफल बनाना चाहता है।

---

5. प्रस्तुत कविता के द्वारा कवि ने हमें क्या प्रेरणा दी है? पाठ्यपुस्तक

उत्तर: कवि ने हमें अपने जीवन को सफल बनाने के लिए संघर्ष और कर्त्तव्य परायण बनने की प्रेरणा दी है। जीवन में पराजय एक विराम की तरह है और समग्र जीवन ही एक महासंग्राम है। इसलिए हर मुसीबत के बावजूद भिक्षा याचना नहीं करनी चाहिए और किसी से इष्ट वस्तु भी माँगना नहीं चाहिए। जीवन एक संग्राम है, इसमें चाहे जय मिले या पराजय, पर व्यक्ति को भयभीत या निराश नहीं होना चाहिए। हार जीत तो होती ही रहती हैं। संघर्ष के पथ पर सदा अग्रसर होते रहना ही सच्चा कर्त्तव्य है। जो व्यक्ति अपने को संपन्न और महान समझता है, उसकी चिन्ता नहीं करनी चाहिए। व्यक्ति को अपने मन की पीड़ा को अपने मन में ही रखना चाहिए और हर स्थिति में कर्त्तव्य मार्ग पर दृढ़ बने रहना चाहिए।

---

6. कविता का सार अपने शब्दों में लिखिए। अतिरिक्त

उत्तर: इस कविता में कवि कहता है कि जीवन एक महासंग्राम है और हार केवल एक विराम है। वह तिल तिल मिट जाएगा, पर दया की भीख नहीं लेगा। सुखद स्मृतियों के लिए, अपने अभावों की पूर्णता के लिए और अपने खंडहरों के निर्माण के लिए भी वह विश्व की संपत्ति नहीं चाहेगा। हार जीत दोनों को समान भाव से स्वीकार करते हुए वह अपनी लघुता और हृदय की वेदना को त्यागेगा नहीं और चाहे ताप मिले या अभिशाप, कर्त्तव्य पथ से कभी नहीं भागेगा।

---

7. कवि किन परिस्थितियों में भी वरदान नहीं माँगना चाहता? अतिरिक्त

उत्तर: कवि चाहे तिल तिल मिट जाए, चाहे उसे सुखद यादों के लिए संपत्ति चाहिए हो, चाहे उसके जीवन में अभाव हों, चाहे उसके हृदय में पीड़ा हो और चाहे उसे ताप या अभिशाप मिले, इन सभी परिस्थितियों में भी वह वरदान नहीं माँगना चाहता।

---

8. कवि के स्वाभिमान का भाव कविता में कैसे व्यक्त हुआ है? अतिरिक्त

birlaeducation.org

उत्तर: कवि का स्वाभिमान इस बात से व्यक्त हुआ है कि वह तिल तिल मिट जाएगा, पर दया की भीख नहीं लेगा। वह किसी महान व्यक्ति, देवता या धन कुबेर से भी वरदान नहीं चाहता। वह अपनी लघुता को स्वीकार करता है, पर किसी के सामने हाथ फैलाना उसे स्वाभिमान के खिलाफ लगता है।

---

9. हार को विराम मानने का क्या भाव है? अतिरिक्त

उत्तर: हार को विराम मानने का भाव है कि हार जीवन का अंत नहीं है, बल्कि एक पड़ाव है। जैसे यात्रा में विराम के बाद फिर चलना होता है, वैसे ही हार के बाद भी मनुष्य को निराश हुए बिना फिर संघर्ष करना चाहिए। हार जीत तो जीवन में होती ही रहती हैं।

---

10. लघुता और वेदना प्रसंग से कवि क्या कहना चाहता है? अतिरिक्त

उत्तर: कवि कहता है कि वह अपने को बड़े लोगों की तुलना में छोटा मानता है, पर अपनी लघुता को स्वीकार करता है और उसे त्यागना नहीं चाहता। उसी प्रकार वह अपने हृदय की वेदना को भी अपने मन में ही रखना चाहता है। वेदना को दूर करने के लिए किसी से वरदान माँगना उसे उचित नहीं लगता।

---

11. कवि की जीवन दृष्टि का वर्णन कीजिए। अतिरिक्त

उत्तर: कवि की जीवन दृष्टि संघर्ष और स्वाभिमान की है। वह जीवन को महासंग्राम मानता है, हार को विराम मानता है, हार जीत दोनों को समान भाव से स्वीकार करता है, किसी से दया की भीख नहीं लेता, किसी से वरदान नहीं माँगता और कर्त्तव्य पथ पर अडिग बना रहता है।

---

12. कविता की आज के समय में प्रासंगिकता समझाइए। अतिरिक्त

उत्तर: आज के समय में भी लोग सफलता के लिए दूसरों पर निर्भर रहते हैं और कठिनाइयों से घबड़ाकर हार मान लेते हैं। यह कविता सिखाती है कि हार से निराश नहीं होना चाहिए, किसी के सामने हाथ नहीं फैलाना चाहिए और अपने कर्त्तव्य पथ पर दृढ़ रहकर संघर्ष से ही जीवन सफल बनाना चाहिए। इसलिए यह कविता आज भी प्रासंगिक है।

---

13. वरदान न माँगने के पीछे कवि का क्या तर्क है? अतिरिक्त

उत्तर: कवि का तर्क है कि वरदान माँगना स्वाभिमान के खिलाफ है। जीवन एक संग्राम है, जिसमें हार जीत होती रहती है। अपनी यादों को सुखद बनाने के लिए, अपने अभावों को पूरा करने के लिए और अपनी पीड़ा को दूर करने के लिए भी वरदान माँगना उचित नहीं है। मनुष्य को संघर्ष से ही अपने जीवन को सफल बनाना चाहिए।

---

14. कर्त्तव्य परायणता का महत्त्व कविता के आधार पर समझाइए। अतिरिक्त

उत्तर: कवि के अनुसार कर्त्तव्य परायणता ही जीवन की सच्ची सफलता है। चाहे हृदय को पीड़ा मिले, चाहे श्राप मिले या मिथ्यावाद लगे, पर कर्त्तव्य पथ से कभी भागना नहीं चाहिए। संघर्ष के पथ पर सदा अग्रसर होते रहना ही सच्चा कर्त्तव्य है और इसी से जीवन सफल बनता है।

---

15. कविता में प्रयुक्त प्रतीकों का भाव स्पष्ट कीजिए। अतिरिक्त

उत्तर: कविता में महासंग्राम जीवन की कठिनाइयों का प्रतीक है, विराम हार के बाद के पड़ाव का प्रतीक है, तिल तिल मिटना धीरे धीरे समाप्त होने का प्रतीक है, खंडहर जीवन के टूटे हुए अवशेषों का प्रतीक है और वरदान दूसरों की कृपा पर निर्भर रहने का प्रतीक है, जिसे कवि स्वीकार नहीं करता।

biharieducation.org

---

16. कवि का संदेश अपने शब्दों में लिखिए। अतिरिक्त

उत्तर: कवि का संदेश है कि मनुष्य को स्वाभिमान के साथ जीना चाहिए, किसी से दया की भीख नहीं लेनी चाहिए, किसी से वरदान नहीं माँगना चाहिए, हार को विराम मानकर फिर संघर्ष करना चाहिए और हर परिस्थिति में कर्त्तव्य पथ पर दृढ़ बने रहना चाहिए।

---

17. जीवन महासंग्राम क्यों है? कविता के आधार पर समझाइए। अतिरिक्त

उत्तर: जीवन महासंग्राम इसलिए है क्योंकि जीवन यात्रा में मनुष्य को भयंकर स्थितियों और कठिनाइयों से लगातार संघर्ष करना पड़ता है। इस संघर्ष में हार भी होती है और जीत भी होती है। कवि कहता है कि इस जीवन युद्ध में तिल तिल मिट जाने के बावजूद किसी से दया की भिक्षा स्वीकार नहीं करनी चाहिए।

---

18. सुखद स्मृति और संपत्ति प्रसंग का भाव स्पष्ट कीजिए। अतिरिक्त

उत्तर: कवि कहता है कि अपने सुखद क्षणों को यादगार बनाने के लिए, अपने अभावों की पूर्णता के लिए और अपने भग्न अवशेषों के निर्माण के लिए भी वह विश्व की संपत्ति नहीं चाहता। इसका भाव है कि अतीत की यादों और जीवन की कमियों को पूरा करने के लिए भी दूसरों के सामने हाथ फैलाना स्वाभिमान के खिलाफ है।

---

19. कविता की भाषा और शैली पर टिप्पणी लिखिए। अतिरिक्त

उत्तर: कविता की भाषा सरल और ओजपूर्ण हिंदी है। इसमें महासंग्राम, विराम, तिल तिल मिटना, खंडहर, लघुता, वेदना, ताप और अभिशाप जैसे शब्दों का सुंदर प्रयोग हुआ है। कवि सीधे अपने मन की बात कहता है, जिससे कविता में दृढ़ता और स्वाभिमान का भाव आ गया है।

---

20. कविता का केंद्रीय भाव अपने शब्दों में लिखिए। अतिरिक्त

उत्तर: कविता का केंद्रीय भाव स्वाभिमान, संघर्ष और कर्त्तव्य परायणता है। कवि जीवन को महासंग्राम मानता है, हार को विराम मानता है, किसी से दया की भीख नहीं लेता, किसी से वरदान नहीं माँगता और चाहे ताप मिले या अभिशाप, कर्त्तव्य पथ से कभी नहीं भागता। यही उसका जीवन संदेश है।

---

birlaeducation.org